International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 850-852

हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में चित्रित पात्रों में मानवीय संवेदना

रेणु बाला, डॉ॰ विजय लक्ष्मी महेंद्रा

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बिकानेर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ब्रहम तत्व को भी मानव मात्र में खोजने का स्पष्ट निर्देश किया है। मानवीय मूल्यों में द्विवेदी जी की अगाध निष्ठा है। जीवन के सांसारिक कष्टों से पलायन करना एकांतिक तप को मान्यता देना अधूरा सच है। वह तपस्या तभी सार्थक होगी जब वह क्रियात्मकता से जुडीहो। महर्षि औषस्ति रैक्ब के एकान्तिक तप को लोकोन्मुखी करते हुए कहते है-''एकान्त का तप बडा नही है बेटा, देखो संसार में कितने कष्ट है, रोग है, शोक है, दरिद्रता है, कुसंस्कार है, लोग दुख से व्याकुल है। उनमें जाना चाहिए। उनके दुख का भागी बनकर उनका कष्ट दूर करने का प्रयत्न करें। यही वास्तविक तप है। जिसे यह सत्य प्रकट हो गया है कि सर्वत्र एक ही आत्मा विद्यमान है। वह दुख कष्ट से जर्जर मानवता की कैसे उपेक्षा कर सकता है।[१] 'औषस्तिपाद ऋषि का यह कथन अलौकिक आनन्द को प्रदान करने वाला है।

द्विवेदी जी पाप और पुण्य की लोकवादी व्याख्या करते हुए कहते है-''जिस कार्य से किसी का दुख दूर हो, उसका इहलोक और परलोक सुधर जाये रोगी निरोग हो जाये, दुखिया सुखी हो जाये, भूखा अन्न पाये, प्यासा जल पाये कमजोर लोग आश्वासन पायें, ये सब पुण्य है।''[२] यहाँ द्विवेदी जी का चितंन मानवतावाद की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जोकि प्रमाता को आन्दतिरेक में बहा ले जाने में समर्थ है।

द्विवेदी जी का प्रकृति और संस्कृति का यह समन्वय अलौकिक आनन्द की सृष्टि करने वाला है। द्विवेदी जी सौन्दर्य प्रेमी है जब बाण कवि के रूप में वह किसी दृश्य का वर्णन करते है तो करणीय कार्य कही सहमा सा दुबक जाता है और पाठक भी उसे भूलकर उसी दृश्य के विविध रंगो और आयामों में स्वंय डूब जाता है। चांदनी रात का दृश्य अवलोकनीय है जोकि अलौकिक एश्वर्य की पीठिका पर समासीन है-''इन्द्र का ऐरावत गज जब स्वर्मन्दाकिनी में अवगाहन करके निकलता होगा तो उसके श वेत कुभंस्थल पर से सिन्दूर धुल जाने के बाद ऐसी शोभा होती होगी। सारा आकाश चांदनी से इस प्रकार भर गया था जैसे किसी अज्ञात शिल्पीसे सुधा-विलेपन चूर्ण का भंडार ही उलट गया हो।''[३] इसी प्रकार अलंकारिक प्रकृति सौन्दर्य सूर्यास्त के दृश्य को देखा जा सकता है जोकि अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करने वाला है-''देखते-देखते चन्द्रमा पद्य मधु से रंगे हए वृद्र कल हंस की भांति आकाश गंगा के पुलिन से उदास भाव से पश्चिम जलधि के तट पर उतर गया। समस्त दिडमंण्डल वृद्धरंक मृग की रोमराजि के समान पांडुर हो उठा। हाथी के रक्त से रंजित सिंह के सटाभार की भातिं किंवा लोहित वर्ण लाक्षारस के सूत्र के समान सूर्यकिरणें आकाश रूपी वन भूमि से नक्षत्र रूपी फूलों को इस प्रकार झाड देने लगी। दो एक जो अब भी बच रही थी वे पश्चियाकाश रूपी समुन्द्र तट पर सीपियों के उन्मुक्त मुख से बिखरे हुए मुक्ता पटल की भाति दिख रही थी।''[४] यह सौन्दर्य निरूपण अलौकिक ऐश्वर्य की आभा से अभिमंडित है जोकि विचारगत औदात्य को द्विगुणित करता है।

स्पष्ट है द्विवदी जी की कृतियाँ विचारगत औदात्य के अलौकिक ऐश्वर्य से पूर्णतः समावृत्त है। प्रेम, मानवतावाद, प्राचीन भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना आदि की विराट अभिव्यंजना में आचार्य द्विवेदी जी ने कदम-कदम पर विचारों को अलौकिक ऐश्वर्य विकीर्ण किया है। ऐसे ही कृति पिता का मैं पुत्र था- जनम का आवारा गप्पी, अस्थिर चित्त और घुमक्कड।''[५] 'चारूचन्द्र लेख' में सादी मौला तो तेरहवीं शताब्दी के एक इतिहास प्रसिद्ध विद्रोही फक्कड चरित्र है। ''पुनर्नवा' में भी माढण्य शर्मा जो अपनी फक्कड मस्ती का जीवंत रूप पा सके है तथा दूसरे है सुमेरू काका। 'अनामदास का पोथा' में द्विवेदी जी ने रैक्ब को भी इसी विलक्षणता में उपन्यास का नायक चुना है जो जाने क्यों हर समय अपनी पीठ खुजलाया करता है। रैक्ब के फक्कडपन का सबसे बडा प्रमाण और क्या होगा कि पहली बार उसने राजा को उपदेश देना अस्वीकार कर दिया और अन्न और सोना भी लौटा दिया। लेकिन दूसरी बार जब राजा अपनी सुन्दर कन्या को साथ लेकर फिर गये तो फक्कड ऋषि रैक्ब प्रसन्न हुआ और राजा की सुन्दर कन्या का मुखकर अपनी ओर उठाकर बोले कि हे शूद्र इस सुन्दर मुख के कारण तुम मुझे बोलने को बाध्य कर रहे हो।''[६]

द्विवेदी जी मनुष्य सत्य को मानने वाले शास्त्र और उन रूढियों के हिमायती धर्म के ढोंगी पहरेदारों को नंगा करते है और बताना चाहते है कि ''इतिहास साक्षी है कि देखी-सुनी बात को ज्यौं का त्यौं कह देना या मान लेना सत्य नही है। सत्य वह है जिससे लोक का अत्यंतिक कल्याण होता है। ऊपर से वह झूठ क्यों न हो दिखाई देता हो वही सत्य है।''[७] यहाँ विचारगत औदात्य अपने शक्तिशाली रूप में व्यक्त हुआ है। जोकि पाठक के अन्दर अपूर्व शक्ति का संचार करता है। वीरत्व मनुष्य का एक स्वभाविक गुण है। 'चारूचन्द्र लेख' में विद्याधर भटट देश की रक्षा के लिए चन्द्रलेखा का आवहान करते है- चन्द्रलेख मैं तुम्हें इस देश के उददीप्त इतिहास की प्रेरणा मानता हूँ। देवी, उठो इस हतश्री देश को प्रेरणा दो.... शस्त्र बल से हारना हराना नही है, आत्मबल से हारना ही वास्तविक पराजय है।'' [८] चन्द्रलेखा विद्याधर को प्रणाम करते हुए कहती है आर्य ऐसा ही होगा इस देश में मिथ्या खंड अभिमानों को चूर्ण करने के लिए चन्द्र लेखा बज्र के हथौडे का काम करेगी और हतदर्प, हीन वीर्य पराजित प्रजा के चित्त में इतिहास की मंगलमयी प्रेरणा देने के लिए अमृत की तरह झरेगी। आर्य आवश्वत हो।'' [९] चन्द्रलेखा का यह कथन उदात्तता का स्पर्श करते हुए अत्यंत शक्तिशाली रूप में व्यक्त हुआ है। 'पुनर्नवा' में आर्य देवरात के विचार अत्यंत शक्तिशाली रूप में व्यक्त हुए है जोकि विचारगत औदात्य की गरिमा से परिपूर्ण है। देवरात मंजूला को संबोधित करते हुए

कहते है–''मैं भुजा उठाकर कह सकता हूँ देवि तुम्हारे भीतर देवता का निवास है। तुम जिस पाप जीवन की बात कह रही हो वह मनुष्य की बनायी हुई विकृत सामाजिक व्यवस्था की देन है। चिन्ता न करो देवि, इससे उद्धार हो सकता है। तुम्हारा देवता तुम्हारे भीतर बैठा हुआ अवसर की प्रतीक्षा कर रहा है। कोई बाहरी शक्ति किसी का उद्धार नहीं करती। यह अर्न्तयामी देवता ही उद्धार कर सकता है।''[१०] निश्चय ही आर्य देवरात के विचार आलौकिक शक्ति से परिपूर्ण हैं।''

द्विवेदी जी ने 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में इस प्रश्न के लिए उठाया है और इसके उत्तर की ओर भी संकेत किया है। बाणभटट कहता है–''निपुणिका ने कल कहा था कि मेरी ही शपथ करके तुम सत्य–सत्य कहो आर्य, मेरा कौन सा ऐसा पाप चरित्र है जिसके कारण मैं आजीवन दुःख की निदारूण भटटी में जलती रही, क्या स्त्री होना ही मेरे अनर्थो की जड नही है? इन शब्दो में कितना मर्मातक दुख है वह मैं ही जानता हूँ। निपुणिका में कितने गुण है कि वह समाज और पूजा का पात्र हो सकती थी पर हुई नही। इतने दिनों में साथ हूँ उसके चरित्र में मैंने कोई कालुष्य नही देखा। वह हँसमुख है। कृतज्ञ है, मोहिनी है, लीलावती है ये क्या दोष है? मेरा चित्त कहता है कि दोष किसी और वस्तु में है जो इन सारे सदगुणों को दुर्गुण कहकर व्याख्या करा देती है। वह वस्तु क्या है? निश्चय ही कोई बडा असत्य समाज के नाम पर घर बना बैठा है'' [११] निश्चय ही द्विवेदी जी के यह विचार सामाजिक दोषों की ओर स्पष्ट संकेत करते है जोकि पाठक के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोडने में समर्थ है।

'चारूचन्द्रलेख' ऐतिहासिक सन्दर्भों में मानव की गतिविधियों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए उनका चरम उत्कर्ष सामाजिक मंगल में मानता है। व्यष्टि का कल्याण समिष्ट में माना गया है विविध साधना पद्धतियाँ मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए है। सामिष्टगत कल्याण भावनाही सर्वोपरि महत्व रखती है। 'स्व' का त्याग ही मनुष्य को वृहन्तर समाज से जोडता है। बोधा अपने गुरू का उपदेश सुनता हुआ राजा सतवाहन से कहता है–''अपने प्राणों को शुभ उददेश्यों के लिए संकट में डाल देने से बडी कोई पूजा नही होती'' [१२] संसार मे व्याप्त पाशविकता के प्रति सादी मौला अपने विचार प्रकट करता है। जोकि विचारगत औदात्य से समादृत है तथा पाठक हृदय को परिवर्तित करने की क्षमता रखता है–''उस तीन बरस की भोली बच्ची को माँ की गोद में रखकर छेद डालने की क्या आवश्यकता थी? अब भी ये सब अत्याचार कहाँ समाप्त हुए है। सैकडों कारागार में पडे है। यह क्या हो रहा है। मैं अपराधी हूँ तो मुझे मारो बाबा। इस भोले निरीह निरपराध बच्चों ने और भले घर की बहु–बेटियों ने क्या अपराध किया था, इन्हें क्यों सता रहे हो?''[१३]

'पुनर्नवा' में आचार्य द्विवेदी के नारी विषयक विचार उत्कृष्ट प्रभाव क्षमता से परिपूर्ण है। 'पुनर्नवा' में स्वस्थ समाज के निमार्ण के लिए, संस्कृति की स्थापना मे, धर्म की रक्षा में स्त्री के अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण योगदान का निरूपक किया गया है। नारी जिस सम्मान की अधिकारिणी है उससे उसे वंचित करने से जो अनर्थ उत्पन्न होता है उसका उल्लेख चन्द्रमोलि के इन शब्दों में हुआ है–''देवता और शास्त्रों को नष्ट करने वाले विचार कैसे नष्ट होंगे यदि पुरूष ने तपस्या द्वारा नारी को प्रसन्न करने का यत्न नही किया? पुरूष उद्धत पौरूषबल पर भरोसा करता है और मोहन–आनन्ददायिनी शोभा और चाख्ता का तिरस्कार करता है। वह उसे भोग की सामग्री समझता है मनोरंजन का साधन मानता है। अपना आश्रित समझकर उसके साथ अवांछिनीय व्यवहार करता है। नतीजा जो होना चाहिये वह हो रहा है सर्वत्र लूट–पाट, नोच–खसोट, का बवन्डर आसमान को रजोलिप्त बना रहा है।'' [१४]

'अनामदास का पोथा' नामक उपन्यास में द्विवेदी जी ने उपनिषदकालीन संस्कृति का गरिमामय चित्र अंकित किया है। जीवन पद्धतियों, रीति–रिवाजों और आस्था विश्वासों को रूपायित करने वाले तत्व चिंतन के दार्शनिक पक्ष का उदघाटन इसमे हुआ है। इस उपन्यास मे द्विवेदी जी ने यह निरूपित किया है कि संस्कृति की उच्चता मात्र गहन तत्व चिंतन मे नही, अपितु वह क्रियात्मक जीवन मे कितने गहरे उतर सकता है। ''दुखियों के दुख दूर करना ही सच्ची अध्यातिक साधना है। यही तप है, यही मोक्ष है,।'' [१५] महात्मा जी के ये विचार उदात्त आदर्श की झांकी है। ''लोक–कल्याण प्रधान वस्तु है। वह जिससे सधता हो वही सत्य है।'' [१६] ''विपत्ति के समय विषद ग्रस्त लोगो की सेवा करना ही परम धर्म है।'' [१७] बडी सिद्धी के लिए बडा त्याग चाहिये,जो जितना दे सकता है। उतना ही पा सकता है'' [१८] ''रास्ता ही रास्ता बता देता है, बेटा कुछ करते–करते ही सही ढंग से सीखा जा सकता है।'' [१९] इन सुक्तियों में द्विवेदी जी का सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक चिन्तन का रूप दृष्टिगोचर होता है जिसके द्वारा मानव कल्याण के लिए अमर–संदेश देने में वे सफल हुए है। इन्हीं महासन्देशों का सबल पाकर द्विवेदी जी का साहित्य चिरकाल तक नवीन बना रहेगी।

द्विवेदी जी की विचार सरिता मानव हृदय की असंख्य सदवृत्तियों दया, करूणा, प्रेम, सदभावना के बीच अवगाहित होती हुई मनुष्यत्व के श्रेष्ठ श्रृंगार शील के उत्स तक पहुंचती हुई निराशा से आशा, असत्य से सत्य और भौतिकता से अध्यात्मिकता की भाव भूमि पर पहुंचती है। द्विवेदी जी के विचार इतने व्यापक है कि वह व्यक्ति से समष्टि, राष्ट्रीयता से अर्न्तराष्ट्रीयता, प्राचीनता और अर्वाचीनता, अध्यात्मिकता और भौतिकता, कला और विज्ञान, यथार्थ और आदर्श परम्परा और आधुनिक प्रबन्ध और मुक्तक अन्तः और बाहृय सभी कुछ उसकी परिधि में अनायस ही आ जाते है।

निष्कर्ष

द्विवेदी जी के उदात्त विचारों में मानव हित रक्षा की चिंता निरंतर बनी रही है। दीन दुखियों की सेवा, शोषण और भय से मुक्ति तथा निर्भीकता एक उददाम जिजीविषा का चिन्मुख विकास

दृष्टिगोचर होता है। निश्चय ही समग्रतः विचारगत औदात्य की दृष्टि से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का साहित्य समृद्ध और प्रभावशाली है उनके विचारों की विस्तृत परिधि, ऐश्वर्य की अदभुत आभा शक्ति की विलक्षणता और प्रभाव की गहनता पाठकों को अभिभूत करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनामदास का पोथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० ६०
2. –वही– पृ० ६७
3. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० २३
4. –वही– पृ० ३४
5. बाणभट्ट की अत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० ११
6. अनामदास का पोथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० २०२
7. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० ८२

8. चारूचन्द्र लेख – हजारी प्रसोद द्विवेदी – पृ० ६६
9. –वही– पृ० ६६
10. पुनर्नवा – हजारी प्रसाद द्विवेदी– पृ० ६६
11. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० १६४
12. चारूचन्द्र लेख – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० २७३
13. –वही – पृ० २६५
14. पुनर्नवा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० १०४
15. अनामदास का पोथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० ७४
16. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० ८२
17. पुनर्नवा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० २३३
18. चारूचन्द्र लेख – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० ५८
19. अनामदास का पोथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ० १२०